कुरुक्षेत्र

ग्रामीण भारत में पोषण-संवेदनशील कृषि

संदर्भ

- ग्रामीण भारत में लगभग 900 मिलियन लोग निवास करते है जहाँ कृषि 44% कार्यबल को रोज़गार प्रदान करता है। 'पोषण-संवेदनशील कृषि (NSA)' कुपोषण, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी व मोटापे को दूर करने के लिए खेती एवं पोषण को एकीकृत करती है।
- बायोफोर्टिफाइड फसलों, आहार विविधता, महिलाओं के सशक्तिकरण और जलवायु-लचीली खेती को बढ़ावा देकर NSA प्रत्यक्ष रूप से सतत विकास लक्ष्य 2 (SDG 2: शून्य भूखमरी) व 3 (SDG 3: अच्छा स्वास्थ्य एवं कल्याण) में योगदान देता है।

भारत का पोषण विरोधाभास

- दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक (220 मिलियन टन) और दालों व मसालों का प्रमुख निर्यातक होने के बावजूद भारत गंभीर कुपोषण का सामना कर रहा है।
- भारत की रैंक वैश्विक भूख सूचकांक 2024 में 127 देशों में 105वीं है और भारत का स्कोर 27.3 के साथ 'गंभीर' श्रेणी में है।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (NFHS-5), 2019–21 के अनुसार, 5 वर्ष से कम आयु के 35.5% बच्चे स्टंटेड (बौने) हैं, 19.3% वेस्टेड (कम वजन) हैं और 67.1% एनीमिक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में एक ही तरह के अनाज-आधारित आहार का प्रभुत्व है जिससे पोषण संबंधी परिणाम में कमी आ रही है।

अवधारणा एवं मुख्य तत्व

- खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुसार, पोषण-संवेदनशील कृषि (NSA) विविधीकरण, समानता एवं स्वास्थ्य संबंधों के माध्यम से पोषण परिणामों को बेहतर बनाने के लिए कृषि प्रणालियों को मजबूत करता है।
- इसके मुख्य घटक इस प्रकार हैं-
  - **फसल विविधीकरण:** बाजरा, दालें, फल व सब्जियाँ
  - **बायोफोर्टिफिकेशन:** जिंक-समृद्ध गेहूँ, आयरन-फोर्टिफाइड बाजरा, विटामिन ए शकरकंद
  - **महिला सशक्तिकरण:** महिलाएँ कृषि कार्यबल का 70-80% हिस्सा हैं किंतु उनके पास <13% भूमि का स्वामित्व है (विश्व बैंक, 2020)।
  - **स्वास्थ्य संबंध:** पोषण शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य योजनाओं के साथ तालमेल
- विश्व बैंक (2022) का अनुमान है कि NSA वर्ष 2030 तक बच्चों में स्टंटिंग को 20% तक कम कर सकता है जिससे कुपोषण से संबंधित नुकसान में $11 बिलियन की बचत होगी।

ग्रामीण पोषण बोझ

- **व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण (CNNS), 2016-18:** पाँच वर्ष से कम आयु के 40% ग्रामीण बच्चे एनीमिक हैं (बनाम 28% शहरी)।
- **विश्व में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण की स्थिति (SOFI), 2023:** 224 मिलियन भारतीय (16.6%) कुपोषित हैं।
- **ग्रामीण गरीबी:** 19.28% (नीति आयोग MPI, 2023)।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी:**
  - 30% प्री-स्कूल बच्चों में जिंक की कमी पाई गई।

- विटामिन A की कमी से सालाना 6.1 मिलियन बच्चों में अंधापन होता है (WHO 2023)।
- 54.3% गर्भवती महिलाएँ एनीमिया से पीड़ित हैं जिससे 18.2% अल्प वज़न वाले शिशु जन्म लेते हैं।

➢ **जलवायु तनाव:** अनियमित वर्षा से बारिश वाले क्षेत्रों में दालों का उत्पादन 15% कम हो गया (ICAR 2024)।

- फसल कटाई के बाद नाशवान वस्तुओं का नुकसान 40% तक पहुँच जाता है (FAO 2023)।

➢ **आर्थिक नुकसान:** वार्षिक GDP का 4% (~$1.4 ट्रिलियन, विश्व बैंक 2019)

भारत में कार्यान्वयन

NSA को कई राष्ट्रीय नीतियों एवं मिशनों में एकीकृत किया गया है:

➢ **पोषण अभियान (2018):** स्टंटिंग में वार्षिक 2% की कमी का लक्ष्य

➢ **बायोफोर्टिफिकेशन मिशन (2022–25):** 10 मिलियन किसानों के लिए पोषक तत्वों से भरपूर फसलों को बढ़ावा देने के लिए ₹10,000 करोड़

➢ **ICAR 'सीड फॉर न्यूट्रिशन' (2020):** 50 मिलियन बीज पैकेट वितरित किए गए; राजस्थान में आयरन-फोर्टिफाइड बाजरा की खेती में 30% की वृद्धि

➢ **FAO प्रोजेक्ट (मध्य प्रदेश):** डेयरी उत्पादों का सेवन 25% बढ़ा, बच्चों में एनीमिया 15% कम हुआ (2023)

➢ 15,000 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया; आहार विविधता 3.5 से बढ़कर 4.7 खाद्य समूहों तक पहुँच गई (2023)

➢ **वर्ल्ड बैंक क्लाइमेट प्लान (महाराष्ट्र):** 2 मिलियन हेक्टेयर में सूखा प्रतिरोधी फसलों से पैदावार में 20% की वृद्धि हुई। फिर भी, लक्षित जिलों में से केवल 40% में ही NSA योजनाएँ संचालन में हैं (NITI आयोग 2024)

खाद्य सुरक्षा आयाम

1. **उपलब्धता:**

- **हार्वेस्टप्लस (2017–23):** 15 मिलियन किसानों ने विटामिन A-समृद्ध मक्का/आलू को अपनाया, जिससे पोषक तत्वों की उपलब्धता में 10–15% की वृद्धि हुई (IFPRI 2023)
- तमिलनाडु के मिलेट मिशन से उत्पादन बढ़कर 1.5 मिलियन टन हो गया है।

2. **पहुँच:**

- NRLM के तहत महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) की आय में 20-30% की वृद्धि हुई।
- **विश्व बैंक (2022):** उत्तर प्रदेश में SHG परिवारों में विविध खाद्य पदार्थों पर 18% अधिक खर्च।

3. **उपयोग:** USAID (2023) के अनुसार स्थानीय सुपरफूड रेसिपी के ज़रिए झारखंड के घरों में बच्चों के पोषक तत्वों का सेवन 22% बढ़ा है।

4. **स्थिरता:**

- **अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र संघ (CGIAR), 2024:** 10 राज्यों में पैदावार स्थिर हुई; मौसमी भूख में 12% कमी आई है।
- **हंगर वॉच (2023):** NSA वाले घरों में भोजन की कमी का सामना करने की संभावना 25% कम है।

स्वास्थ्य एवं आर्थिक प्रभाव

- **केरल:** NSA ज़िलों में बिहार की तुलना में 15% कम स्टंटिंग (NFHS-5) है।
- **ओडिशा (IFPRI 2022):** आयरन-फोर्टिफाइड फसलों से एनीमिया 16% कम हुआ, सोचने-समझने की क्षमता में 8% सुधार हुआ।
- **पंजाब (WHO 2023):** पशुधन-आधारित NSA से विटामिन D की कमी 20% कम हुई।

- **यूनिसेफ 2024:** फोलेट के सेवन में सुधार से समय पूर्व जन्म में 10% की कमी आई है।
- **लैंसेट 2023:** NSA को बढ़ाने से वर्ष 2030 तक 10 लाख बच्चों की मौत को रोका जा सकता है, ग्रामीण GDP में 2-3% की बढ़ोतरी हो सकती है।
- **निमहंस (NIMHANS) 2024:** NSA समुदायों में महिलाओं में अवसाद की दर में 15% की गिरावट आई।

केस अध्ययन

- **राजस्थान (बूंदी):** BAIF–FAO का "नरिश द फ्यूचर" (2019–24) — आहार विविधता 2.8→5.2 खाद्य समूहों तक बढ़ी, स्टंटिंग 12% कम हुई, आय 28% बढ़ी।
- **आंध्र प्रदेश (RySS):** वाटरशेड से जुड़े NSA ने सब्जियों की पैदावार 35% बढ़ाई, एनीमिया 22% कम हुआ (वर्ल्ड बैंक 2023)।
- **केरल:** 80% पंचायतों में NSA से कम वज़न वाले बच्चों की संख्या 18% कम हुई (2024)। पोषण (POSHAN) ट्रैकर जैसे डिजिटल इनोवेशन अब प्रतिमाह 10 करोड़ पोषण रिकॉर्ड की निगरानी करते हैं।

चुनौतियाँ

- NSA को कृषि बजट का केवल 5% मिलता है।
- इसकी पहुँच 30% छोटे किसानों तक (ICRIER 2024) है।
- लगातार लैंगिक असमानताएँ बनी हैं और मंत्रालयों के बीच तालमेल की कमी है।

आगे की राह

- डिजिटल एवं AI-आधारित फसल-पोषण सलाह का विस्तार करना
- सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मज़बूत करना

- **राष्ट्रीय कृषि नीति 2025 (मसौदा):** NSA को बढ़ाने के लिए ₹2.5 लाख करोड़, वर्ष 2030 तक 50% आहार विविधता का लक्ष्य।
- नवाचार और क्षमता निर्माण के लिए सी.जी.आई.ए.आर. (CGIAR) इंडिया हब (2024) के साथ सहयोग।

इकोटूरिज्म के केंद्र के रूप में ग्रामीण भारत

भूमिका

इकोटूरिज्म (पर्यावरण पर्यटन) भारत के ग्रामीण विकास एजेंडे में एक रणनीतिक साधन के रूप में उभरा है। यह एक ऐसा मॉडल प्रस्तुत करता है जो आर्थिक विविधीकरण, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक समावेश को एकीकृत करता है।

इकोटूरिज्म (पर्यावरण पर्यटन) का स्वरूप

- इंटरनेशनल इकोटूरिज्म सोसाइटी द्वारा परिभाषित यह जिम्मेदार यात्रा पर जोर देता है जो पर्यावरण का संरक्षण करती है, स्थानीय समुदायों को सतत बनाए रखती है और विवेचन व शिक्षा को प्रोत्साहित करती है।
- यह भारत की समृद्ध जैव विविधता, सांस्कृतिक परिदृश्य और ग्रामीण विरासत के साथ मजबूती से मेल खाता है जिससे इकोटूरिज्म समावेशी एवं सतत विकास के लिए एक स्वाभाविक विकल्प बन जाता है।
- यात्रियों द्वारा कम प्रभाव वाले, प्रामाणिक एवं समुदाय-केंद्रित अनुभवों की बढ़ती मांग के साथ इकोटूरिज्म की मांग में वृद्धि हुई है। नीति-निर्माताओं ने भी संरक्षण वित्तपोषण, ग्रामीण आजीविका सृजन व हरित आर्थिक विकास के लिए इसकी क्षमता को पहचाना है।

भारत में पर्यटन क्षेत्र की वर्तमान स्थिति

- पर्यटन क्षेत्र घरेलू पर्यटन के नेतृत्व में महामारी के बाद मजबूत रिकवरी प्रदर्शित कर रहा है और भारत यात्रा एवं पर्यटन जी.डी.पी. योगदान में विश्व स्तर पर 10वें स्थान पर है।

- अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन की संख्या वर्ष 2028 तक 30.5 मिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है। वर्ष 2022 में 6.43 मिलियन की अपेक्षा 2023 में विदेशी पर्यटकों का आगमन (FTAs) 9.24 मिलियन रहा है जिसका नेतृत्व बांग्लादेश (24.5%), अमेरिका (20.4%) एवं यूनाइटेड किंगडम (6.9%) कर रहे हैं।
- इस क्षेत्र का आर्थिक योगदान वर्ष 2022 में US$ 199.6 बिलियन था, जिसके वर्ष 2028 तक US$ 512 बिलियन तक पहुंचने का अनुमान है जो 7.1% वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। इससे वर्ष 2029 तक 53 मिलियन नौकरियाँ सृजित होने की उम्मीद है जो एक प्रमुख रोजगार प्रदाता के रूप में इसकी भूमिका को उजागर करता है।

नीति परिदृश्य एवं सरकारी पहल

- **राष्ट्रीय इकोटूरिज्म रणनीति (2022):** यह रणनीति पर्यटन मंत्रालय को MoEFCC के साथ संरेखित करती है जिसमें इको-सर्टिफिकेशन, संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र में उत्तरदायी पर्यटन, सामुदायिक भागीदारी, वहन क्षमता मूल्यांकन एवं संरक्षण-संबद्ध पर्यटन पर जोर दिया गया है।
- **स्वदेश दर्शन योजना एवं स्वदेश दर्शन 2.0 (SD 2.0):** वर्ष 2014-15 से इस योजना ने 76 प्रोजेक्ट्स के लिए 5,292.91 करोड़ रुपए मंज़ूर किए हैं जिनमें से 75 प्रोजेक्ट्स वर्ष 2024 तक पूरे हो चुके हैं। SD 2.0 सतत एवं उत्तरदायी पर्यटन की ओर बढ़ रहा है जिसमें रेनफॉरेस्ट ट्रेकिंग और बर्डवॉचिंग के लिए पथानामथिट्टा-गावी-वागामोन-थेक्कडी (केरल) और वाइल्डलाइफ़-केंद्रित फ़ॉरेस्ट टूरिज़्म के लिए डालमा-बेतला-नेतरहाट (झारखंड) जैसे इको-सर्किट शामिल हैं।
- **प्रसाद योजना:** इस योजना ने 48 प्रोजेक्ट्स में 1,646.99 करोड़ रुपए मंज़ूर किए हैं जो पर्यावरण-आध्यात्मिक सर्किट (Eco-spiritual Circuits),

विरासत संबद्ध पर्यटन (Heritage-linked Tourism) व आवश्यक बुनियादी ढांचा उन्नयन को समर्थन करते हैं।

- **क्षमता निर्माण एवं कौशल विकास:** 56 होटल प्रबंधन संस्थान (IHMs) और 13 फ़ूड क्राफ़्ट संस्थानों (2024) का एक नेटवर्क सस्टेनेबल हॉस्पिटैलिटी में प्रशिक्षण प्रदान करता है जिससे ग्रामीण एवं इकोटूरिज़्म-आधारित आजीविका के लिए मानव पूंजी मज़बूत होती है।
- **ट्रैवल फ़ॉर LiFE मिशन और देखो अपना देश:** ये पहल नागरिक जुड़ाव, उत्तरदायी पर्यटन व्यवहार और संधारणीयता सिद्धांतों के अनुरूप महिलाओं व युवाओं के नेतृत्व वाले ग्रामीण टूरिज़्म मॉडल को बढ़ावा देती हैं।

ग्रामीण भारत: बाज़ार की गतिशीलता और उभरते अवसर

- **तेज़ी से बढ़ता सेक्टर:** इकोटूरिज़्म का मूल्य USD 19.8 बिलियन (2024) है जो वर्ष 2033 तक USD 50.4 बिलियन (CAGR 9.8%) होने का अनुमान है और यह GDP में ~5% का योगदान देता है।
- **संधारणीयता-संचालित मांग:** 82% भारतीय यात्री इको-लॉज, होमस्टे, ट्रेकिंग, बर्डवॉचिंग, एग्रो-टूरिज़्म को प्राथमिकता देते हैं (IMARC, 2025)।
- **ग्रामीण विकास की क्षमता:** 2,509 मिलियन घरेलू पर्यटक (2023); 9.66 मिलियन विदेशी पर्यटक आगमन (FTA/2024, +19.8%)।
- **रोज़गार एवं उद्यमिता:** पर्यटन 12.57% नौकरियाँ सृजित करता है (2024 में 42 मिलियन, 2025 तक 48 मिलियन), जिससे महिलाओं के नेतृत्व वाले सूक्ष्म उद्यम, युवाओं को रोज़गार और विविध ग्रामीण आय संभव होती है।

आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव

- **आर्थिक:** इससे परिवारों की आय में 35-60% की वृद्धि होती है, सूक्ष्म-उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलता है, जैसे- पेरियार टाइगर रिजर्व (₹60-80 करोड़, 50% स्थानीय लोगों को) और मावलिननॉन्ग (+60% आय)।
- **सामाजिक:** महिलाओं को सशक्त बनाता है (केरल में 18,000), युवाओं के पलायन को कम करता है (खोनोमा- 30%) और सामुदायिक स्वामित्व, सांस्कृतिक संरक्षण एवं समावेशिता को मजबूत करता है।
- **पर्यावरणीय:** राजस्व का उपयोग संरक्षण, पुनर्स्थापन एवं अवैध शिकार विरोधी गतिविधियों के लिए किया जाता है, जैसे- बाघ संरक्षण (MP), मैंग्रोव/कोरल बहाली (पश्चिमी घाट, सुंदरबन) से आत्मनिर्भर जैव विविधता संरक्षण होता है।

मुख्य चुनौतियाँ

- अत्यधिक व्यावसायीकरण एवं ग्रीनवॉशिंग स्थिरता मानकों को कमजोर करते हैं।
- **वहन क्षमता पर दबाव:** लद्दाख, जिम कॉर्बेट, केरल में भीड़भाड़ से पारिस्थितिकी तंत्र, पानी व अपशिष्ट प्रबंधन पर दबाव पड़ता है।
- **जलवायु खतरे:** ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र स्तर में वृद्धि, लू, जंगल की आग से पर्यावरण-गंतव्य (इको-डेस्टिनेशन) खतरे में आ जाती है।
- **नियामक कमियाँ :** कमजोर इको-सर्टिफिकेशन, खंडित निगरानी और प्रवर्तन में कमी।
- **बुनियादी ढांचे की बाधाएँ :** ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित स्थायी परिवहन, अपशिष्ट प्रबंधन और जलवायु-लचीली सुविधाएँ

आगे की राह

- **इको-सर्टिफिकेशन और मानकों को मजबूत करना:** अनिवार्य ऑडिट, एकीकृत राष्ट्रीय इको-लेबल
- **वहन क्षमता-आधारित पर्यटन:** आगंतुकों की सीमा, ज़ोनिंग, नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अलग-अलग कीमतें
- **विविधतापूर्ण गंतव्य:** प्रमुख स्थलों पर दबाव कम करने के लिए कम ज्ञात ग्रामीण सर्किट को बढ़ावा देना
- **ग्रामीण आजीविका के साथ एकीकृत करना:** जैविक कृषि, हस्तशिल्प, नवीकरणीय ऊर्जा, एग्रो-फॉरेस्ट्री, आदिवासी पर्यटन से लिंक करना
- **समुदाय-आधारित व जलवायु-लचीला विकास:** इको-लॉज एवं संरक्षण से जुड़े उद्यमों के लिए रेवेन्यू-शेयरिंग, महिला/युवा सहकारी समितियाँ, हरित बुनियादी ढांचा और सार्वजनिक-निजी-सामुदायिक साझेदारी

इकोटूरिज्म ग्रामीण बदलाव के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है जो आर्थिक उत्थान, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक सशक्तिकरण को जोड़ता है। बढ़ती घरेलू मांग, अंतर्राष्ट्रीय पहचान व सहायक नीतिगत ढाँचे के साथ ग्रामीण भारत समावेशी, जिम्मेदार एवं पुनर्योजी पर्यटन में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरने के लिए विशिष्ट रूप से तैयार है।

भारत में एग्रो-टूरिज्म

भूमिका

- वर्ष 2025 में दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था 'भारत' में 15 कृषि-जलवायु क्षेत्र (Agro-climatic Zones) और अलग-अलग फसल प्रतिरूप हैं जिसमें सतत कृषि, ग्रामीण आजीविका एवं सामाजिक-आर्थिक विकास के संचालक के रूप में एग्रो-टूरिज्म (कृषि-पर्यटन) का लाभ उठाने की काफी संभावना है जो 'विकसित भारत @2047' में योगदान देगा।

- एग्रो-टूरिज्म पर्यटन को कृषि के साथ जोड़ता है जिससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। साथ ही, पर्यावरण अनुकूल खेती के तरीकों, सांस्कृतिक संरक्षण एवं पर्यावरण की देखभाल को बढ़ावा मिलता है।

एग्रो-टूरिज्म का महत्व

आर्थिक योगदान एवं रोज़गार

- कृषि क्षेत्र भारत के 46.1% कार्यबल को रोज़गार प्रदान करता है और GDP में 17.8% का योगदान देता है (FY 2023-24)।
- एग्रो-टूरिज्म किसानों, विशेषकर छोटे एवं सीमांत किसानों (~80%) को पूरक (सप्लीमेंट्री) आय प्रदान करता है, माइक्रो-एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मज़बूत करता है।
- IMARC ग्रुप (2024): भारत का एग्रो-टूरिज्म बाज़ार वर्ष 2024 में USD 1,177.9 मिलियन था और 2033 तक इसके USD 4,911.9 मिलियन तक पहुँचने का अनुमान है जिसमें 17.9% का CAGR (2025-2033) होगा।

सतत कृषि एवं पर्यावरणीय लाभ

- एग्रो-टूरिज्म पर्यटकों को खेती की गतिविधियों से जोड़ता है जिससे देशज कृषि, जैविक कृषि और पर्यावरण की देखभाल व प्रबंधन को बढ़ावा मिलता है।
- यह केवल उत्पादन-केंद्रित दृष्टिकोण के बजाय आय-केंद्रित कृषि रणनीतियों को प्रोत्साहित करता है जिससे छोटे खेतों के लिए दीर्घकालिक संधारणीयता बढ़ती है।
- यह पर्यावरण अनुकूल फसल सुरक्षा और सतत कृषि प्रबंधन का समर्थन करता है, जैसा कि HIL (इंडिया) लिमिटेड द्वारा लागू UNIDO-इंडिया FARM प्रोजेक्ट (GEF-UNIDO, 2024) के तहत बढ़ावा दिया गया है।

राज्य-स्तरीय पहल एवं सर्वोत्तम प्रथाएँ

- **महाराष्ट्र:** एग्रो टूरिज्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (ATDC) की स्थापना 2005 में हुई। इसमें 200 से ज़्यादा गाँव, 1,000 से ज़्यादा एग्रो टूरिज्म सेंटर (ATC) शामिल हैं जो 80 लाख से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं जिसमें 500 कृषिक्षेत्र को आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त है।
- **केरल:** एग्री-टूरिज्म मल्टी-स्टेट कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड (AT-COS) द्वारा फार्म स्टे, मसालों की खेती, जैविक कृषि, रिसॉर्ट, योग, नेचुरोपैथी एवं बैकवाटर टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाता है।
- **सिक्किम:** भारत का पहला ऑर्गेनिक राज्य ग्रामीण महिलाओं की अधिक भागीदारी के साथ एग्रो-टूरिज्म को बढ़ावा देता है।
- **कर्नाटक:** कूर्ग में कॉफी प्लांटेशन स्टे घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
- **पंजाब:** फार्म टूरिज्म योजना पर्यटकों को कृषि जीवन शैली से परिचित कराती है, सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करती है और किसानों के लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न करती है।

कृषि लचीलापन एवं वृद्धि

- कृषि क्षेत्र ने ~5% वार्षिक की लगातार वृद्धि दर (FY17-FY23) और वित्तीय वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में 3.5% की वृद्धि दर प्रदर्शित की है।
- भारत दूध, दालों व मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक है और फल, सब्जियां, चाय, फार्म्ड फिश, गन्ना, गेहूं, चावल, कपास एवं चीनी का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।
- खाद्यान्न उत्पादन 265.05 मिलियन टन (2014-15) से बढ़कर अनुमानित 347.44 मिलियन टन (2024-25) हो गया।

सामाजिक-आर्थिक एवं सामुदायिक प्रभाव

- एग्रो-टूरिज्म ग्रामीण समुदाय की भागीदारी को सक्षम बनाता है, स्थानीय व्यवसायों के लिए अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न करता है और नौकरी एवं आय सृजन के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करता है।
- सांस्कृतिक संरक्षण, पारंपरिक कला व शिल्प और स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावा देता है।
- महिलाओं और युवाओं की समावेशी भागीदारी को प्रोत्साहित करता है जिससे समान लाभ सुनिश्चित होते हैं।

वैश्विक एवं नीतिगत तालमेल

- संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन (UNIDO) और खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ग्रामीण विकास के लिए एग्रो-टूरिज्म को बढ़ावा देते हैं जो संयुक्त राष्ट्र-सतत विकास लक्ष्य (UN-SDGs) 'गरीबी उन्मूलन', 'खाद्य सुरक्षा', 'उचित मजदूरी' एवं 'आर्थिक विकास' के अनुरूप है।
- ग्रामीण संसाधनों को जुटाने और संधारणीयता व लाभकारी रिटर्न सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय सहायता, बुनियादी ढांचे के विकास, जागरूकता एवं कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

आगे की राह

औपचारिकीकरण एवं नीतिगत समर्थन

- एग्रो-टूरिज्म को राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय योजनाओं में एकीकृत किया जाना चाहिए जो किसानों के लिए क्षमता निर्माण, बुनियादी ढांचा, डिजिटल सेवाएँ व कौशल विकास प्रदान करे।
- संधारणीयता एवं बेहतर ग्रामीण आजीविका सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण अनुकूल आय-केंद्रित कृषि मॉडल को बढ़ावा देना चाहिए।

ग्रामीण एवं सांस्कृतिक एकीकरण

- भारत के 6.65 लाख गांवों, विविध फसल पैटर्न और अनूठी संस्कृति का लाभ उठाकर पर्यटन अनुभव को आकर्षक बनाना
- पर्यटक सर्किट, स्थानीय मेले, त्योहार एवं समुदाय-आधारित पहल विकसित करना

आर्थिक एवं कृषि तालमेल

- एग्रो-टूरिज्म समावेशी विकास को बढ़ावा दे सकता है, किसानों को सशक्त बना सकता है, धारणीय प्रथाओं को बढ़ावा दे सकता है और भारत को वैश्विक खाद्य नेतृत्व प्राप्त करने में मदद कर सकता है।
- स्थानीय कृषि उत्पादों की मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग को प्रोत्साहित करना, पर्यटन, आतिथ्य व ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना

निष्कर्ष

एग्रो-टूरिज्म कृषि, पर्यटन व ग्रामीण विकास का संगम है जो टिकाऊ खेती, ग्रामीण आजीविका, सांस्कृतिक संरक्षण एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है। नीति समर्थन, क्षमता निर्माण एवं रणनीतिक प्रचार के साथ एग्रो-टूरिज्म 'आत्मनिर्भर भारत', 'विकसित भारत @2047' के भारत के विजन में योगदान दे सकता है। साथ ही, UN-SDGs के साथ तालमेल बिठाते हुए समावेशी ग्रामीण समृद्धि सुनिश्चित कर सकता है।